CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण की संभावनाएँ

नटवर तेली
सहायक आचार्य
संजीवनी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर

First draft received: 12.07.2023, Reviewed: 19.07.2023, Accepted: 28.08.2023, Final proof received: 30.09.2023

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण की संभावनाओं को देखने के लिये सोद्देश्य न्यादर्श विधि से कुल दस विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया। विषय विशेषज्ञों में पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षा शास्त्रियों, भूगोल विषय के ज्ञाताओं को सम्मिलित किया गया। सभी विषय विशेषज्ञों से स्व रचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सूचनाओं को संकलित किया गया। प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ की भूगोल शिक्षण के लिये मानव जीवन, विश्व पर्यावरण, आर्थिक क्रियाओं, राजनीतिक क्रियाओं और तकनीकी विकास के क्षेत्र में पर्याप्त संभावनाएँ देखी जा सकती है।

Keywords: भूगोल शिक्षण, वैश्वीकरण, संभावनाएँ आदि.

परिचय

उन्नीसवीं सदी से प्रारंभ हुआ वैश्वीकरण का सफ़र वर्तमान तक जारी है। यह विभिन्न रूपों में हमारे सामने है। वैश्वीकरण से तात्पर्य पूरे विश्व के एकीकरण से है, जिसमें विश्व की सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक गतिविधियों का बिना बंधन के एक हो जाने से है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के समर्थकों का मानना है कि वैश्वीकरण ने भौगोलिक दूरियों को कम किया है साथ ही विश्व को एकजुट किया है। शिक्षा, सुरक्षा और स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरुक किया है। वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र मजबूत होने से व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दायरे में भी वृद्धि हुई है। जिससे मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं में भी कमी आयी। औद्योगिक विकास, सूचना एवं संचार क्रान्ति, तकनीकी विकास आदि वैश्वीकरण के पक्ष को मजबूत बनाते हैं। आर्थिक मामलों में विदेशी व्यापार और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन हुआ, पूंजी का तीव्र गति से प्रवाह होने लगा।

वैश्वीकरण के मुख्य कारक प्रौद्योगिकीय विकास तथा बाजार प्रचलित आर्थिक विकास प्रणाली है। इन प्रक्रियाओं के कारण ही वैश्वीकरण राष्ट्र और राज्यों के मध्य अन्तर्निर्भरता का बीजारोपण कर रहा है। विश्व की अर्थव्यवस्था मे आया खुलापन, आपसी जुडाव और परस्पर निर्भरता वैश्वीकरण का ही परिणाम है। वास्तव में यह प्रक्रिया अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक लेन-देन पर लगी रोक के हटने से शुरू हुई, जिससे पारस्परिक व्यापार में खुलापन आया तथा विदेशी निवेश के प्रति उदारता बढी।

भारत में वैश्वीकरण की नीव अस्सी के दशक में पड़ी, इसके पीछे आर्थिक कारण जिम्मेदार थे। यह भारत सरकार के आर्थिक सुधारों के लिये किये गये प्रयासों का हिस्सा था। इस समय भारत आर्थिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा था। इस अस्थिरता से निपटने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लिया जाना तय हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा ऋण के लिये जो शर्ते रखी वो निश्चित ही भारत में आर्थिक उदारीकरण को निमन्त्रण था। इसके फ़लस्वरूप भारत में निजी क्षेत्रों से प्रतिबंधों को हटाया गया, सरकारी हस्तक्षेप को कम किया गया। साथ ही भारत तथा अन्य देशों के बीच विदेशी व्यापार पर लगे प्रतिबंध को हटाया गया। यह सब 1991 की आर्थिक नीति के तहत हुआ।

भारत एक लोकतांत्रिक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है तथा यहाँ विविधताओं और बहुलताओं को सांविधानिक संरक्षण प्राप्त है। अनेक धर्म, संस्कृतियों तथा विचारों का समाहार कहे जाने वाले भारत की आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक संरचना अन्य राष्ट्रों से अलग है। वैश्वीकरण के युग की शुरुआत के साथ ही भारत में इन सभी क्षेत्रों बदलाव देखे जाने लगे। जैसा की कहा जाता है कि वैश्वीकरण ने सिर्फ़ आर्थिक पक्ष को प्रभावित किया, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं था आर्थिक के साथ-साथ राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि पक्ष भी प्रभावित हुये। इन सभी प्रभावों के बीच शिक्षा का बच पाना असंभव था। शिक्षा की किसी भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में भूमिका असंदिग्ध है। क्योंकि विकास की वर्तमान और भावी संभावनायें मानव संसाधन के विकास पर निर्भर है तथा मानव

संसाधन का विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा की परम्परागत प्रणाली में काफ़ी बदलाव आया है, साथ ही शिक्षा की विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा अध्यापन की आवश्यकताओं में भी बदलाव आया है।

ऊपर वर्णित सभी परिस्थितियों को देखते हुये वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण का अध्ययन करना प्रासंगिक हो जाता है। क्योंकि भूगोल एक सामाजिक विज्ञान का विषय है और समाज का नज़दीक से अध्ययन करता है, पृथ्वी के भौतिक वातावरण के साथ-साथ मानवीय क्रियाकलापों एवं उनके आपसी संबंधों का भी अध्ययन करता है। प्राकृतिक संसाधन, तकनीकी विकास, भौतिक वातावरण आदि भी इसके अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित है। अर्थात भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में वे सभी क्षेत्र हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वैश्वीकरण से प्रभावित है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण के लिये संभावनाओं का पता लगाना।
2. भविष्य में भूगोल शिक्षण में सुधार हेतु सुझाव प्राप्त करना।

अध्ययन का सीमांकन

शोध विषय से संबंध रखने वाले विषय विशेषज्ञों को सम्मिलित किया गया।

शोध प्रक्रिया

अध्ययन विधि- अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

उपकरण- उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये विषय विशेषज्ञों से वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण की संभावनाओं को जानने के लिये स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श का आकार- सोद्देश्य न्यादर्श विधि से दस विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ- प्रस्तुत शोध में प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने के लिये प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन

1. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? के जवाब में लगभग सभी विशेषज्ञों का यह मानना है कि वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें विश्व के सभी देशों के मध्य की सीमाएँ समाप्त हुई है तथा तीव्र गति से तकनीकी विकास हुआ है। इस तकनीकी विकास से सूचनाओं का आदान-प्रदान तीव्र गति से होने लगा, जिसका प्रभाव यह हुआ कि-

1. सभी देशों के मध्य व्यापारिक लेन-देन बढ़ा है।
2. संस्कृतियों का मिलन हुआ है।
3. वैश्विक अन्तर्निर्भरता में वृद्धि हुई।
4. औध्योगिक, वित्तिय और राजनीतिक क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ है।
5. शिक्षा की प्रकृति में परिवर्तन हुआ है।
6. अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में वृद्धी हुई है।
7. सूचना एवं संचार तकनीकी का विकास हुआ है।
8. सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव आये हैं।

2. वैश्वीकरण और भूगोल शिक्षण के संबंध के संदर्भ में-

1. 90 प्रतिशत विशेषज्ञों के अनुसार भूगोल मानव विकास के उपागम, अन्तर्राष्ट्रीय सूचकांक, व्यावसायिक गतिविधियाँ, जनसंख्या वितरण एवं घनत्व, जनसंख्या संगठन आदि का गहनता से अध्ययन करता है जो सीधा-सीधा वैश्वीकरण की प्रक्रिया से भी संबंध रखते हैं।
2. 80 प्रतिशत विशेषज्ञों के अनुसार भूगोल में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सुधार नीतियाँ आदि सम्मिलित होते हैं, जो वैश्वीकरण से भी संबंध रखते हैं।
3. 70 प्रतिशत विशेषज्ञों के अनुसार आर्थिक विकास में वैश्वीकरण की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, ये आर्थिक गतिविधियाँ भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित हैं। शत प्रतिशत विशेषज्ञों का मानना है कि भूगोल और वैश्वीकरण दोनों से ही अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास होता है साथ ही विश्व के विभिन्न देशों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक पक्षों को समझने के अवसर उपलब्ध होते हैं। जनसंख्या, स्वास्थ्य एवं कल्याण से संबंधित गतिविधियाँ भी दोनों से संबंध रखती है।

3. भूगोल शिक्षण को तकनीकी द्वारा प्रभावी बनाने को लेकर शत प्रतिशत विशेषज्ञ इस बात को ले कर सहमत थे कि भूगोल शिक्षण में कम्प्यूटर के अनुप्रयोगों को बढावा दिया जाना चाहिये। जी.आई.एस., रिमोट सेंसिंग, हवाई फ़ोटो जैसी तकनीकों का प्रयोग अधिकता से किया जाना चाहिये। साथ ही शिक्षण में इन्टरनेट का प्रयोग बढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर भौगोलिक जानकारी के लिये नये सोफ़्टवेयरों का निर्माण किया जाना चाहिये। वैज्ञानिक सोच विकसित करने वाली विषयवस्तु का समावेश किया जाना चाहिये।

4. वर्तमान समय में भूगोल शिक्षण की चुनौतियों के संबंध में विशेषज्ञों से जानने पर यह ज्ञात हुआ कि-

1. शत प्रतिशत विशेषज्ञ यह मानते हैं कि वर्तमान में शिक्षा को बाज़ार तय कर रहा है, आधुनिक तकनीकों की उपलब्धता का अभाव, निजीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति, रोजगारोन्मुखता का अभाव आदि प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
2. 90 प्रतिशत विशेषज्ञों का मानना है कि प्रायोगिक व सैद्धान्तिक भूगोल का समय-समय पर अद्यतनीकरण नहीं होना, सैद्धान्तिक विषयवस्तु में क्रियात्मकता का अभाव, विस्थापन, नगरीय करण, नगरीय करण से उत्पन्न आधारभूत सुविधाओं की समस्या भी चुनौतियों की दृष्टि से देखा जाना चहिये।
3. 80 प्रतिशत विशेषज्ञों के अनुसार संपोषित विकास, संसाधन संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वर्मिंग आदि के लिये संप्रत्यय विकसित कर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करना भी चुनौती है।

5 उपर्युक्त चुनौतियों से निपटने के लिये किये जाने वाले उपायों के बारे में जानने पर यह ज्ञात हुआ कि-

1. सभी विशेषज्ञ यह मानते हैं कि मानवीय क्रियाकलापों में संतुलन विषयक विषयवस्तु का समावेश किया जाना चाहिये, तकनीकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो, विद्यार्थियों को वैश्वीकरण से प्रभावित आर्थिक परिवेश से अवगत कराते रहना साथ ही नवीनतम शिक्षण विधियों, रणनीतियों और तकनीकों को अपनाकर भौगोलिक ज्ञान की गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने से इन चुनौतियों का समाधान हो सकता है।
2. 90 प्रतिशत विशेषज्ञ यह मानते हैं कि प्रयोगात्मक कार्यों पर विशेष बल दिया जाना चाहिये, छात्र शिक्षक अनुपात को संतुलित किया जाना चहिये, विषयवार शिक्षकों की

पर्याप्त उपलब्धता हो, पुस्तकालयों को समृद्ध बनाया जाना चहिये।

6 भविष्य में भूगोल शिक्षण में सुधार हेतु निम्न सुझाव प्राप्त हुए-

1. भूगोल शिक्षण में सहकारिता एवं अन्तर्निर्भरता की भावना को विकसित किया जाना आवश्यक है।
2. भूगोल में स्थानीय पर्यावरण को वैश्विक पर्यावरण से जोड़ने संबंधित संप्रत्यय को विकसित किया जाना चाहिये।
3. अन्तर्राष्ट्रीय सिद्दान्तों का समावेश भूगोल के संदर्भ में किया जाना चाहिये।
4. भूगोल विषय की पाठ्यचर्या को समय-समाय पर अध्यतन किया जाना चाहिये।
5. भूगोल शिक्षण के लिये नवीन शिक्षण विधियों का समावेश करना आवश्यक है।
6. भूगोल में सूचनाओं के प्रवाह संबंधी जानकारी सम्मिलित की जानी चाहिये।
7. भूगोल के लिये उच्च शिक्षा में स्पेशियलाइजेशन होना चाहिये।
8. भूगोल शिक्षण में भौगोलिक वास्तविकताओं पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिये।
9. भूगोल में आपदा प्रबंधन व क्षेत्रीय विकास के संप्रत्यय का समावेश किया जाना चाहिये।
10. भूगोल शिक्षण में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग में वृद्धि होनी चाहिये।
11. भूगोल की मूल्यांकन पद्धति में सुधार किया जाना आवश्यक है।
12. भूगोल के लिये वैश्विक, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर मानवीय समस्याओं, मुद्दों, समय, अंतरिक्ष, भौतिक वस्तुओं, पहचानों और मतभेदों, विकास, प्रकृति और मनुष्य की चुनौतियों आदि समस्याओं के हल हेतु सैद्धान्तिक और प्रायोगिक पहलुओं के मद्देनज़र गुणवत्ता परक अनुसंधान करना।
13. भूगोल से संबंधित सम्मेलनों, संगोष्ठियों, परिसंवादों, कार्यशालाओं आदि का आयोजन कर तथा इसमें सक्रिय भागीदारी के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समुचित मंचों पर अनुसंधान कार्य के प्रकाशन के माध्यम से भौगोलिक ज्ञान और अनुभव को साझा करने और उसके प्रसार को बढ़ावा देना चाहिये।

निष्कर्ष

1. मानव जीवन- प्राप्त सुझावों के आधार पर कहा जा सकता है कि विषयवस्तु को स्थानीय परिवेश से जोड़ा जाना आवश्यक है, बदलते जीवन मूल्यों का समावेश किया जाना आवश्यक है। असमानताओं को दूर करने के प्रयास हो, दक्षता और कौशल विकास के प्रयास किए जाने चाहिये। भाषा संबंधित अवरोधों को दूर करने हेतु सबसे अधिक राजकीय विद्यालय सहमत पाये गये। साथ ही यह पाया गया कि रचनात्मकता की प्रवृति का भी विकास होना चाहिये।
2. विश्व पर्यावरण- विश्व पर्यावरण के क्षेत्र में भूगोल व्याख्याताओं से प्राप्त संभावनाएँ इस प्रकार है। प्रदूषण की समस्या से निपटने के प्रयास हो, आपदा प्रबंधन की व्यवस्था, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरुकता पर निजी विद्यालय सर्वाधिक सहमत पाये गये। इसी तरह विनाश रहित विकास, जैव विविधता संरक्षण, औध्योगिकरण की बढ़ती प्रवृत्ति की रोकथाम पर राजकीय विद्यालय अधिक सहमत पाये गये।
3. आर्थिक क्रिया- आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में राजकीय विद्यालय सबसे अधिक संभावनाएँ तलाशते हैं। सभी समूहों द्वारा दिये गये सुझावों में शिक्षा में निजीकरण को रोका जाना चाहिये, पर्याप्त बजट की व्यवस्था हो, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता हो, शिक्षा का बाजारीकरण नहीं होना चाहिये तथा आर्थिक क्रियाओं को समझने का संप्रत्यय का विकास किया जाना प्रमुख है।
4. राजनैतिक क्रिया- वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण की राजनैतिक क्रियाओं हेतु संभावनाओं की दृष्टि से प्राप्त सुझावों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग सभी समूह इस बात पर सहमत हैं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से विकासशील देशों पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों को विषयवस्तु में जोड़ा जाये, स्थानीय राजनैतिक मुद्दों को सम्मीलित किया जावे, जिम्मेदार नागरिकता की प्रवृत्ति का विकास किया जाना चाहिये, वैश्विक स्तर पर राजनैतिक संपर्क एवं संवाद को बढाया जाना चाहिये, शिक्षा में लोकतांत्रिक वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिये तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने के प्रयास किये जाने चाहिये।
5. तकनीकी विकास- तकनीकी विकास के क्षेत्र में व्याख्याताओं के सुझाव है कि विद्यालयों में तकनीकी उपकरणों की उपलब्धता हो, तकनीकी के प्रयोग हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये, नवीन अनुसंधान की प्रवृत्ति का विकास होना चाहिये, व्यवस्थित प्रयोगशालाओं की उपलब्धता होनी चाहिये। अनुदेशणात्मक सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता हो, शिक्षण में नवाचारों का समावेश हो, गतिविधि आधारित शिक्षण हो, मूल्यांकन के लिये उचित पद्धतियों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

उपसंहार

शोध के माध्यम से वैश्वीकरण के संदर्भ में भूगोल शिक्षण की संभावनाओं का पता लगाने का प्रयास किया गया है। जहाँ विषय विशेषज्ञों से प्राप्त मतों के आधार पर भूगोल विषय के विभिन्न क्षेत्रों जैसे मानव जीवन, विश्व पर्यावरण, आर्थिक क्रियाओं, राजनीतिक क्रियाओं और तकनिकी विकास के क्षेत्र में पर्याप्त संभावनाएँ देखी गई है।

संदर्भ

Ahluwalia, D. s. (2017). *Education: Issues and Challenges.* new delhi: APH Publishing Corporation.

Geo-Jaja, M. A. (2016). *Effects of Globazation on Education Systems and Development.* Boston: sense publishers.

Heda, Deepti. *Education and Emerging Indian Society.* Jaipur: Think Tanks, Biyani Group of Colleges, 2011.

बर्नाड, ए. स. (1973). *भूगोल शिक्षण के सिद्धान्त तथा अभ्यास.* पटना: बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी.

यूनिवर्सिटी, ल. प. (2012). *शैक्षिक अनुसंधान प्रणाली एवं सांख्यिकी.* नई दिल्ली: लक्ष्मी पब्लिकेशन्स.